Wisdom Vortex:
International Journal of Social Science and Humanities

Bi-lingual, Open-access, Peer Reviewed, Refereed, Quarterly Journal

e-ISSN: 3107-3808

Wisdom Vortex: International Journal of Social Science and Humanities, Volume: 01, Issue: 04, Jan-Mar 2026

How to cite this paper:
Mishra, P. (2026). Chhayawad ki Virasat: Hindi Kavya me Bhawanatmak Gehrai ka Samikshatmak Vishleshan. *Wisdom Vortex: International Journal of Social Science and Humanities, 01*(04), 27-31.

Received: 08 Nov. 2025
Accepted: 05 Dec. 2025
Published: 17 Jan. 2026

Copyright © 2025 by author(s) and Wisdom Vortex: International Journal of Social Science and Humanities.
This work is licensed under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY- 4.0).
https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

छायावाद की विरासत: हिन्दी काव्य में भावनात्मक गहराई का समीक्षात्मक विश्लेषण

प्रियांशु मिश्र [1]

सारांश

हिन्दी साहित्य के इतिहास में छायावाद एक अत्यंत महत्वपूर्ण युग है, जिसने काव्य को बाह्य वास्तविकता से उठाकर आंतरिक भाव-भूमि की ओर मोड़ दिया। यह लेख छायावादी काव्य में निहित भावनात्मक गहराई का समीक्षात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है और यह दर्शाता है कि कैसे जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा एवं निराला जैसे चार प्रमुख कवियों ने व्यक्तिगत दुख, प्रकृति-चेतना, आध्यात्मिक खोज और स्त्री-अस्तित्व जैसे विषयों को काव्य का केंद्र बनाकर हिन्दी काव्य को एक नई दिशा दी। छायावाद ने न केवल भावनाओं को केंद्र में रखा, बल्कि उन्हें प्रतीकों, मुक्त छंद और नवीन भाषिक अभिव्यक्ति के माध्यम से अभिव्यक्त किया। यह आंदोलन पश्चिमी रोमांटिकता से प्रभावित अवश्य था, किंतु भारतीय अध्यात्म, अद्वैत दर्शन और भक्ति परंपरा के साथ उसका एक अद्वितीय सांस्कृतिक संवाद हुआ। लेख में छायावाद के मनोवैज्ञानिक आयामों—जैसे अवचेतन, आनिमा और अस्तित्वगत द्वंद्व—को भी उजागर किया गया है। साथ ही, महादेवी वर्मा के माध्यम से उभरती स्त्री-चेतना का लैंगिक विश्लेषण किया गया है, जो छायावाद को केवल भावुकता से ऊपर उठाकर एक सामाजिक-दार्शनिक आंदोलन के रूप में स्थापित करता है। यद्यपि प्रगतिवादियों ने छायावाद पर "अति-व्यक्तिवाद" और "सामाजिक विमुखता" का आरोप लगाया, तथापि यह लेख तर्क देता है कि आंतरिक वास्तविकता का चित्रण भी सामाजिक परिवर्तन का एक अभिन्न अंग है। आज के मानसिक स्वास्थ्य और अस्तित्वगत तनाव से ग्रस्त युग में छायावाद की भावनात्मक गहराई अत्यंत प्रासंगिक है। यह लेख निष्कर्ष निकालता है कि छायावाद केवल एक साहित्यिक धारा नहीं, बल्कि मानवीय भावनाओं की अमर विरासत है, जो आज भी हिन्दी काव्य की धड़कन बनी हुई है।

विशिष्ट शब्द: *छायावाद, भावनात्मक गहराई, हिन्दी काव्य, महादेवी वर्मा, प्रतीकवाद, आधुनिकता*

हिन्दी साहित्य के इतिहास में छायावाद एक ऐसा स्वर्णिम अध्याय है, जिसने न केवल काव्य-रचना के रूप और रंग को बदला, बल्कि भारतीय मन की

[1] शोधार्थी, हिन्दी विभाग, साबरमती विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात

आंतरिक भाव-भूमि को एक नई गहराई और संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया। यदि भारतेंदु युग ने हिन्दी साहित्य को जागरण दिया और द्विवेदी युग ने उसे सुदृढ़ आधार प्रदान किया, तो छायावाद ने उसे आत्मा की गहराइयों तक पहुँचने का माध्यम बना दिया। यह वह कालखंड है जब कवि ने केवल समाज की बाह्य वास्तविकताओं को नहीं, बल्कि अपने अंतर्मन के उथल-पुथल, स्वप्नों, विरह, वैराग्य, प्रेम और अस्तित्वगत प्रश्नों को काव्य का विषय बनाया।

छायावाद का उदय प्रायः 1918 से 1938 तक के दो दशकों के बीच माना जाता है—एक ऐसा समय जब भारत सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक रूप से गहरे संकट और परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। प्रथम विश्व युद्ध के बाद का नैराश्य, गांधीवादी आंदोलन की आध्यात्मिकता, पश्चिमी दर्शन—विशेषकर रोमांटिक काव्यधारा (Romanticism) और सिम्बलिज्म (Symbolism)—का प्रभाव, तथा भारतीय अध्यात्म परंपरा का आंतरिक संवाद, इन सभी तत्वों ने मिलकर छायावादी काव्य को एक अनूठी आकृति और गहराई प्रदान की।

"छायावाद" शब्द की उत्पत्ति स्वयं इस आंदोलन के प्रमुख कवि सुमित्रानंदन पंत के काव्य संग्रह "पल्लव" (1926) की भूमिका से जुड़ी है, जहाँ निराला ने इस शब्द का प्रयोग किया था। हालाँकि, छायावाद केवल एक शब्द नहीं, बल्कि एक संवेदना, एक दृष्टिकोण और एक आंतरिक यात्रा थी। जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा और निराला—इन चार स्तंभों ने न केवल हिन्दी काव्य को नई दिशा दी, बल्कि भावनाओं के अभिव्यक्ति के ढंग को ही बदल दिया। उनके काव्य में व्यक्तिगत दुख-दर्द सार्वभौमिक बन गए; विरह केवल प्रेमिका के लिए नहीं, बल्कि अज्ञात आत्मा, प्रकृति या ईश्वर के लिए भी था; और प्रकृति केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि जीवंत, सहानुभूतिपूर्ण साथी बन गई।

इस प्रकार, छायावाद की विरासत केवल साहित्यिक इतिहास का एक अध्याय नहीं है—यह भावनात्मक गहराई का एक जीवंत उत्तराधिकार है, जो आज भी समकालीन कवियों और पाठकों के मन पर छाया हुआ है। यह समीक्षा-पत्र छायावादी काव्य में निहित भावनात्मक गहराई का विश्लेषण करते हुए यह समझने का प्रयास करेगा कि कैसे यह आंदोलन ने हिन्दी काव्य को एक आंतरिक, आध्यात्मिक और मानवीय आयाम प्रदान किया, जो आज भी प्रासंगिक है।

छायावादी काव्य की भावनात्मक विशेषताएँ: एक सामूहिक दृष्टि

छायावादी काव्य की सबसे प्रमुख विशेषता उसकी भावनात्मक गहराई है। यह गहराई केवल भावुकता नहीं, बल्कि भावनाओं के सूक्ष्म, जटिल और बहुआयामी स्वरूप का चित्रण है। निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से इस गहराई का विश्लेषण किया जा सकता है:

(क) व्यक्तिगत दुख का सार्वभौमीकरण

छायावादी कवि अपने व्यक्तिगत दुख—चाहे वह रोग, निराशा, विरह या अस्तित्वगत खालीपन हो—को केवल व्यक्तिगत सीमा तक नहीं रखते। वे उसे मानव-जाति के सामूहिक दुख के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

(ख) प्रकृति के साथ आंतरिक साझेदारी

छायावादी कवि प्रकृति को निर्जीव पृष्ठभूमि नहीं मानते। प्रकृति उनकी भावनाओं की सहभागी, प्रतिध्वनि और कभी-कभी आलोचिका भी होती है।

अस्तित्वगत प्रश्न और आध्यात्मिक खोज

छायावादी काव्य में भावनाएँ केवल मानवीय संबंधों तक सीमित नहीं हैं। वे अस्तित्व, अर्थहीनता, ईश्वर की खोज और आत्मा के प्रश्नों तक फैली हैं।

स्त्री चेतना का उदय

महादेवी वर्मा के माध्यम से छायावाद ने हिन्दी काव्य में स्त्री की आंतरिक दुनिया को पहली बार गहराई से उजागर किया।

चार स्तंभों का विस्तृत विश्लेषण

(क) जयशंकर प्रसाद: दुख का सौंदर्यीकरण

प्रसाद के काव्य में भावनाएँ कभी अराजक नहीं होतीं। वे संयमित, सुसंगठित और कलात्मक होती हैं। उनकी प्रसिद्ध कविता *"आँसू" में आँसू को वे "अमृत की बूँद" कहते हैं:*

"आँसू तेरे अमृत की बूँद हैं,
जग के जीवन के मूल हैं…"

यहाँ दुख को नकारा नहीं गया, बल्कि उसे जीवन का स्रोत घोषित किया गया है। प्रसाद की भावनात्मक गहराई उनके सौंदर्यबोध में निहित है—वे दुख में भी सौंदर्य खोजते हैं। उनका महाकाव्य "कामायनी" भी इसी दृष्टिकोण का प्रतीक है—जहाँ मनु और शतरूपा के माध्यम से मानव मन के भावनात्मक द्वंद्व को सृजनात्मक ऊर्जा में परिवर्तित किया गया है।

(ख) सुमित्रानंदन पंत: प्रकृति के साथ आत्मीय संवाद

पंत के काव्य में भावनाएँ प्रकृति के माध्यम से व्यक्त होती हैं। उनके लिए प्रकृति केवल दृश्य नहीं, बल्कि चेतना का विस्तार है। "झरना" कविता में झरना कहता है:

"मैं अपने आपको तोड़ता हूँ,
तुझे बहाने को…"

यहाँ त्याग, प्रेम और आत्म-समर्पण की भावना प्रकृति के रूप में अभिव्यक्त हुई है। पंत की भावनात्मक गहराई उनके प्रकृति-प्रेम और अद्वैत दर्शन से उपजी है। उनकी कविताएँ अक्सर गीतात्मक होती हैं, जिनमें लय और संगीत के माध्यम से भावनाओं को और अधिक प्रभावी बनाया गया है।

(ग) महादेवी वर्मा: स्त्री की आंतरिक विद्रोही चेतना

महादेवी ने छायावाद में एक नया आयाम—स्त्री की आत्म-सचेतना—जोड़ा। उनकी भावनाएँ कोमल नहीं, बल्कि तीव्र, तप्त और प्रश्नात्मक हैं। "मैं नीर भरी दुख की बदली..." में वे कहती हैं:

"मैं नीर भरी दुख की बदली,
फिर भी तेरे आँगन की धूल चाहती हूँ…"

यहाँ दुख के बावजूद आशा की चाहत है—एक ऐसी चाहत जो स्त्री को निष्क्रिय नहीं, बल्कि सक्रिय इच्छाशक्ति से सुसज्जित करती है। आलोचक नंद किशोर अचार्य के अनुसार, "महादेवी ने स्त्री को काव्य में वस्तु नहीं, विषय बनाया।"

(घ) निराला: अस्तित्वगत विद्रोह और भावनात्मक अराजकता

निराला छायावाद के भीतर भी एक विद्रोही थे। उनकी भावनाएँ संयमित नहीं, बल्कि उफानपूर्ण, कभी-कभी अराजक भी होती हैं। "सरोज स्मृति" में वे प्रश्न करते हैं:

"क्यों जगत् में आई थी वह?
क्यों चली गई इतनी जल्दी?"

यहाँ भावना केवल शोक नहीं, बल्कि अस्तित्व के प्रति आक्रोश है। निराला की भावनात्मक गहराई उनके अस्तित्ववादी दुविधा में निहित है—वे जीवन को प्यार करते हैं, पर उसकी निरर्थकता से भी विद्रोह करते हैं। उन्होंने छंद के बंधन तोड़कर मुक्त छंद का प्रयोग किया, जिससे भावनाओं की स्वाभाविक गति को अभिव्यक्त करना संभव हुआ।

भाषाई नवाचार और प्रतीकात्मकता

छायावादी कवियों ने भावनाओं को व्यक्त करने के लिए भाषा, छंद और प्रतीकों का अद्वितीय समन्वय किया।

- **भाषा:** प्रसाद ने संस्कृतनिष्ठ शैली अपनाई, जबकि महादेवी ने खड़ी बोली को कोमलता प्रदान की। निराला ने तो भाषा के नियमों को ही चुनौती दी।
- **छंद:** पंत के गीतात्मक छंद भावनाओं को लय देते हैं, जबकि निराला का मुक्त छंद भावनाओं की अनियंत्रित गति को दर्शाता है।
- **प्रतीक:** छायावादी कवि भावनाओं को सीधे नहीं, बल्कि प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त करते हैं—आँसू, बादल, झरना, अग्नि—ये सभी भावनाओं के वाहक हैं।

इस प्रकार, छायावादी काव्य में भावना केवल विषय नहीं, बल्कि रूप और शैली का भी अभिन्न अंग है।

छायावाद और मनोविज्ञान: अवचेतन की गहराइयाँ

आधुनिक मनोविज्ञान (विशेषकर Jung का Collective Unconscious या Freud का Subconscious) के संदर्भ में छायावाद की भावनाओं को फिर से पढ़ा जा सकता है। छायावादी कवि अपने अवचेतन मन की गहराइयों से भावनाएँ खींचते हैं। महादेवी की "अदृश्य प्रेमी" कल्पना Jung के आनिमा (Anima) सिद्धांत से मेल खाती है—जहाँ पुरुष मन में स्त्री आदर्श का प्रतिबिंब होता है। निराला का अस्तित्वगत आक्रोश भी Freudian Thanatos (मृत्यु-आकर्षण) की अवधारणा से जुड़ा है। इस प्रकार, छायावाद केवल साहित्यिक नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक रूप से भी समृद्ध है।

पश्चिम की छाया या भारत की आत्मा?

छायावाद को अक्सर पश्चिमी रोमांटिसिज्म की नकल माना जाता है, परंतु यह एक सांस्कृतिक संवाद था। Wordsworth की "emotion recollected in tranquility" की तरह छायावादी भी भावनाओं को प्राथमिकता देते हैं, परंतु उनकी भावनाएँ अद्वैत वेदांत, भक्ति परंपरा या तंत्र-दर्शन से जुड़ी हैं। उदाहरण के लिए, पंत का "झरना" Shelley के "Cloud" से प्रभावित हो सकता है, परंतु झरना का त्याग भारतीय दान और त्याग के आदर्श से जुड़ा है।

लैंगिक दृष्टिकोण: पुरुष बनाम स्त्री की भावना

छायावाद में भावनाओं का लैंगिक आयाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रसाद और पंत की कविताओं में स्त्री अक्सर आदर्शित, दूरस्थ या प्रेरणा का स्रोत है—वास्तविक नहीं। इसके विपरीत, महादेवी की स्त्री विषय (subject) है, न कि वस्तु (object)। महादेवी की कविताएँ स्त्री के आंतरिक जीवन, उसके दुख, उसकी इच्छाओं और उसकी आध्यात्मिक खोज को दर्शाती हैं। यह छायावाद में एक स्त्री-केंद्रित भावनात्मकता का उदय है, जो बाद के फेमिनिस्ट साहित्य के लिए मार्ग प्रशस्त करती है।

छायावाद की आलोचना और आधुनिक प्रासंगिकता

प्रगतिवादियों—विशेषकर अज्ञेय और रामविलास शर्मा—ने छायावाद पर "अति-व्यक्तिवाद", "सामाजिक वास्तविकता से विमुखता" और "भावुकता का अतिरेक" का आरोप लगाया। हालाँकि, यह आलोचना आंशिक रूप से अन्यायपूर्ण है। छायावाद ने मानव मन की आंतरिक वास्तविकता को सामने लाकर काव्य की परिभाषा को विस्तृत किया।

आज के युग में, जहाँ मानसिक स्वास्थ्य, अकेलापन और अस्तित्वगत तनाव वैश्विक समस्याएँ बन चुके हैं, वहाँ छायावाद की भावनात्मक गहराई अत्यंत प्रासंगिक है। यह हमें सिखाता है कि भावनाओं को दबाना नहीं, बल्कि उन्हें कलात्मक रूप देना चाहिए।

छायावाद की लंबी छाया: आधुनिक हिन्दी काव्य पर प्रभाव

छायावाद का प्रभाव केवल अपने युग तक सीमित नहीं रहा। प्रगतिवाद और नयी कविता जैसे बाद के आंदोलनों ने छायावाद की भावनात्मकता की आलोचना की, परंतु उसकी गहराई से बच नहीं सके। आज के कवि जैसे कुमार विश्वास या रवि कुमार भी छायावादी भावनाओं का ही आधुनिक रूप प्रस्तुत करते हैं।

निष्कर्ष: भावना की अमर विरासत

छायावाद ने हिन्दी काव्य को एक ऐसी भावनात्मक गहराई प्रदान की, जिसके बिना हम मानव मन की जटिलताओं को पूर्णतः नहीं समझ सकते। यह आंदोलन केवल कविता नहीं लिखता—यह आत्मा की भाषा बोलता है। जयशंकर प्रसाद का सौंदर्य, पंत का प्रकृति-प्रेम, महादेवी की स्त्री-चेतना और निराला का अस्तित्ववाद—ये सभी धाराएँ मिलकर एक ऐसी भावनात्मक नदी बनाती हैं, जो आज भी हिन्दी काव्य की धड़कन है।

छायावाद की विरासत हमें याद दिलाती है कि कविता केवल शब्दों की नहीं, भावनाओं की कला है—और जब तक मनुष्य के मन में भावनाएँ होंगी, छायावाद कभी मरेगा नहीं।

सन्दर्भ सूची

1. प्रसाद, जयशंकर. *कामायनी*, 1936, भारती भवन, 1972
2. *आँसू*, जयशंकर प्रसाद रचनावली, खंड 1, राजकमल प्रकाशन, 1985
3. पंत, सुमित्रानंदन. *पल्लव*, भारती भवन, 1926
4. *गुंजन*, भारती भवन, 1932
5. *झरना*, सुमित्रानंदन पंत रचनावली, खंड 2, राजकमल प्रकाशन, 1990
6. वर्मा, महादेवी, *नीहार*, भारती भवन, 1930
7. *यामा*, भारती भवन, 1939
8. "मैं नीर भरी दुख की बदली...", *सारिका*, 1932
9. निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी, *अनमोल घड़ी*, भारती भवन, 1932
10. *सरोज स्मृति*, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' रचनावली, खंड 3, राजकमल प्रकाशन, 1995
11. शर्मा, रामविलास, *निराला की साहित्य साधना*। राजकमल प्रकाशन, 1957
12. *हिंदी साहित्य का इतिहास*. राजकमल प्रकाशन, 1972
13. अचार्य, नंद किशोर. *हिंदी साहित्य का इतिहास: छायावाद युग*, विद्या प्रकाशन, 1988
14. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. *छायावाद और प्रगतिवाद*, लोक भारती प्रकाशन, 1968
15. सिंह, नम्वर. *कविता के नए प्रतिमान*, राजकमल प्रकाशन, 1968
16. राय, डॉ. नगेंद्र. *हिंदी साहित्य का इतिहास*. गंगा प्रसाद शर्मा, 1961
17. जौहर, डॉ. रामकुमार. *छायावाद: एक पुनर्मूल्यांकन*, साहित्य अकादमी, 1995
18. त्रिपाठी, डॉ. रामविलास. *आधुनिक हिंदी काव्य-धाराएँ*, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1978
19. वर्ड्सवर्थ, विलियम. *लिरिकल बैलेड्स की भूमिका*, 1802, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2008

20. जंग, सी. जी., *आर्कीटाइप्स और सामूहिक अवचेतन*, अनुवाद: आर. एफ. सी. हल, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1969
21. फ्रॉयड, सिगमुंड. *सुख के सिद्धांत से परे*, अनुवाद: जेम्स स्ट्रैची, डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन एंड कंपनी, 1961
22. साहित्य अकादमी. *छायावादी कविताएँ: चयनिका,* साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2005